चैतन्य लहरी

खण्ड V, अंक 1 व 2

सहज योग में विवाह

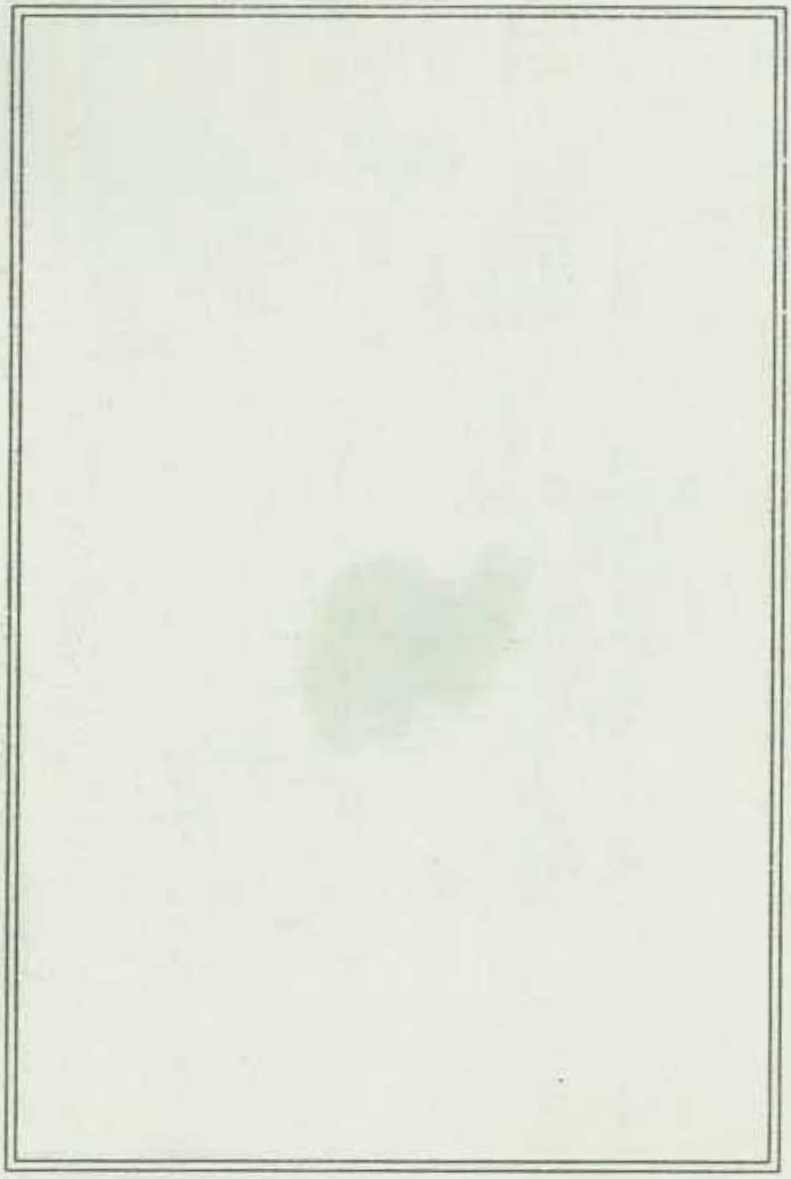

विवाह का लक्ष्य आनन्द प्रदान करना है

प. पू. श्री माताजी निर्मला देवी

चैतन्य लहरी

खण्ड V, अंक 1 व 2

विषय सूची

	पृष्ठ
(1) विवाह का महत्व	3
(2) शोभनीय स्थिति की तैयारी	7
(3) भावी वधुओं को शिक्षा	9
(4) हृदय से सहस्रार तक	11
(5) समाज तथा सहजयोग में माताओं की भूमिका	12
(6) विवाह की कसमें	14
(7) प्रस्थान वार्ता	15

विवाह का महत्व

डोलिस हिल, लन्दन, 8.5.1980

सहज योग सर्वप्रथम आपका अंकुरण करता है और फिर विकसित होता है। इस विकास अवस्था में आपको एक विशाल व्यक्तित्व बनना होता है।

विवाह करके आप पहले से अच्छे व्यक्ति बन जाते हैं आपका व्यक्तित्व पहले से अच्छा हो जाता है। सहजयोगियों के लिए विवाह आवश्यक क्यों हैं? क्योंकि विवाह एक सहज बात है। परमात्मा ने आपको विवाह की इच्छा किसी उद्देश्य से दी है। पर इस उद्देश्य के लिए उपयोग न होने पर यह इच्छा विकृति तथा घिनौनापन बन सकती है। आपके विकास में यह बाधक हो सकती है। अतः अपने अन्तःस्थित इस इच्छा को हमें समझना चाहिए।

विवाह अर्थात एक पत्नी जो आपके अस्तित्व का अंग प्रत्यंग हो, जिस पर आप निर्भर कर सकें, जो आपकी मां, बहन, बालक तथा सभी कुछ है। आप अपनी सारी भावनाएं अपनी पत्नी से बांटते हैं अतः पत्नी को विवाह के महत्व का ज्ञान होना आवश्यक है।

आपने देखा होगा कि सहजयोग में सभी को दायें या बायें की समस्या होती है। सहज विवाह में आपको जो साथी मिलेगी वह स्वतः ही आपके व्यक्तित्व का सम्पूरक होगा। मान लीजिए आपकी बाई ओर कमजोर है तो आपके साथी की बाई ओर इतनी शक्तिशाली होगी को आपकी कमी को पूरा कर देगी और इस प्रकार आपका विवाह सफल विवाह बन जाएगा।

पर इसके लिए आवश्यक है कि आप जीवन के हर क्षण को बाटें। यदि आप जीवन बांटना नहीं जानते तो कठिनाई होगी। जब प्रेम की बात आती है तो हम किस प्रकार अपने अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करते हैं? अपने आनन्द, कष्ट तथा समस्याओं को बांट कर। किन्तु सहज योग में यह अभिव्यक्ति इससे कहीं अधिक है। यहां आपको सामुहिकता में बांटना होता है। सहजयोग में विवाह केवल दो व्यक्तियों के लिए नहीं होता। इस प्रकार की धारणा गलत है। सहज–विवाह दो समुदायों दो राष्ट्रों या दो ब्रहांडो के मध्य होता है। इसके आनन्द को केवल अपने तक ही सीमित नहीं करना।

सहजयोग में परस्पर अच्छे पति–पत्नी होना मात्र ही काफी नहीं है। उस प्रेम का आनन्द पूरे समाज को भी मिलना चाहिए। यदि आप ऐसा नहीं कर पाते तो आपका विवाह सहज विवाह न होकर एक साधारण विवाह है जिसमें विशेष कुछ भी नहीं। सहज–विवाह द्वारा महान आत्माओं को पृथ्वी पर अवतरित होने का अवसर मिलना चाहिए। ऐसा तभी संभव है जब आप अपना प्रेम पूरे सहज–समाज में बांट रहे हों। अतः सहज विवाह की पहली परीक्षा यह है कि आप अन्य सहज–योगियों में कितना आनन्द बांट रहे हैं।

उदाहरणतया एक सामान्य विवाह में पुरुष को परिवार का शीर्ष (मुखिया) बनना होता है। पर शीर्ष के साथ–साथ आप हृदय भी बनिए। हृदय तो सिर से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। मस्तिष्क रुक जाने पर भी हृदय कार्य करता रहता है। पर हृदय के रुकते ही मस्तिष्क भी रुक जाता है। अतः स्त्री हृदय है तथा पुरुष मस्तिष्क। पुरुष में यह धारणा बनी रहने दो कि वह मुखिया है (सिर है), यह केवल धारणा ही तो है। मस्तिष्क को जैसा अच्छा लगता है वह निर्णय लेता है, पर मस्तिष्क यह भी जानता है कि उसे हृदय के लिए कार्य करना है। हृदय ही सर्वव्यापी है तथा हर चीज का स्रोत है। अतः स्त्री को यदि यह ज्ञान है कि वह हृदय की स्थिति में है तो यह स्वयंको न तो अपमानित मानेगी और न दबी हुई। मेरे विचार में स्त्रियां (विशेषकर पश्चिमी) इस सत्य को भूल बैठी है। इस सत्य को यदि उन्होंने पहचाना होता तो समस्याएं बहुत कम होती।

अतः लोगों का यह सोचना गलत है कि वह मस्तिष्क से दूसरों पर शासन करते हैं या उन्हें दबाते हैं। बात ऐसी नहीं है। वास्तव में हृदय ही शासक है। हृदय मस्तिष्क को आवृत कर सकता है, इसे शांत कर सकता है। मस्तिष्क तो पागलो की तरह चलता ही रहता है। पर हृदय अपने प्रेम से शांत कर के इसे आनन्द तथा प्रसन्नता प्रदान कर सकता है। हृदय में ही आत्मा का निवास है। अतः हृदय ही शरीर की शक्ति है क्योंकि आपका लक्ष्य आत्मा बनना है और आत्मा का निवास हृदय में है।

यदि मस्तिष्क हर समय हृदय पर प्रभुत्व जमाना शुरु कर दे तो क्या होगा? सभी कुछ नीरस हो जाएगा जैसे अत्यधिक सतर्क और सावधान पुरुष अपने तथा दूसरों के लिए सिरदर्द बन जाते हैं। इस प्रकार के लोग अत्यन्त नीरस हो जाते हैं और अवांछित सतर्कता के कारण अपने बच्चों तक का भी आनन्द नहीं ले पाते। पत्नी यदि जरा देर से आ जाए तो चिल्लाने लगते हैं। पत्नी के आने का, उससे मिलन का आनन्द, अपने हृदय से

मिलन के आनन्द का सौभाग्य भी वे खो देते हैं।

मस्तिष्क सारे नियमों को ताक पर रख कर भयंकर समस्याएं खड़ी कर सकता है। अतः हृदय का सम्मान तथा इसकी आज्ञा का पालन होना ही चाहिए। पर इसका अर्थ यह भी नहीं कि स्त्रियां पुरुषों पर प्रभुत्व जमाएं। आज्ञा पालन का अर्थ है प्रेम के अर्थ को समझना और प्रेम से कार्य करना। प्रेम में कार्य करना अच्छा है।

उदाहरणार्थ में आपको सुबह से शाम तक भाषण देती हूं पर आप तंग नहीं होते। सामान्यतः लोगों को मेरे भाषण से तंग आ जाना चाहिए। पर आप तंग नहीं होते क्योंकि आप जानते हैं कि मैं आपको बहुत प्रेम करती हूं। इसी प्रकार स्त्री को भी अपनी भूमिका के विषय में आश्वस्त होना होगा कि वह प्रेम करती है। पुरुष थोड़ा सा टेढ़ा हो सकता है, थोड़ा भटक भी सकता है पर वह ठीक हो जाएगा। बाहरी रोब को देखकर उसका मूल्यांकन मत कीजिए। वह अपनी भूल को स्वीकार कर लेगा। अतः एक दम उसकी बात का विरोध मत कीजिए। मैने अपने जीवन में यह अनुभव किया है।

पति को अपना पिछलग्गू बनाने में कौन सी महानता है। ऐसा करना गलत है। "आप इधर चलिए" यह कहने की क्या आवश्यकता है। हम एक ही मार्ग पर चल रहे हैं। बस उतना समझना है कि कोई बांई तरफ है और कोई दाई ओर। बाई ओर वाले को बाई ओर रहना है तथा दायीं ओर वाले को दाई ओर। मान लिजिए बायां पहिया दाई ओर को आने लगे तो केवल एक ही पहिया बाकी रह जाएगा। तब हम क्या करेंगे? हम सभी एक ही मार्ग पर चल रहे हैं।

इसके बारे कोई दो मार्ग नहीं है। रथ को संतुलन में रखने के लिए दो पहिए आवश्यक हैं। पर हम एक ही मार्ग पर चल रहे हैं। वे सोचते हैं कि एक पहिए को दाएं जाना है तथा दूसरे को बाएं। इस प्रकार के परिवार की अवस्था की कल्पना कीजिए। हम एक ही मार्ग पर चल रहे हैं। केवल समझना आवश्यक है कि एक को हृदय की शक्ति से जीवित रहना है तथा दूसरे को तर्क एवं सूझबूझ की शक्ति से। पर तर्क को एक बिंदु पर आकर हृदय की ओर झुकाना पड़ता है। आपको अपने हृदय की शक्ति का पोषण करना होगा। पर आप लोग हर कार्य में पुरुषों का मुकाबला करती हैं। मैं ऐसा नहीं करती। जो भी कार्य मैं स्वयं नहीं करती वे सभी लोग मेरे लिए करते हैं।

मैं ऐसे कार्य करती हूं जो दूसरे लोग इतना अच्छी तरह नहीं कर सकते जितना मैं। जैसे मैं खाना अच्छा बनाती हूं अतः इसके लिए उन्हें मेरे पास आना पड़ता है। पर पुरुषों को स्त्रियों के तथा स्त्रियों को पुरुषों के कार्य नहीं करने चाहिए। दोनों को अपने अपने कार्यों में दक्ष होना चाहिए। परस्पर प्रतिस्पर्धा की भावना दूर होते ही सहजयोग अधिक अच्छा कार्य करने लगेगा। प्रेम के अभाव में ही किसी का रोब अखरता है। प्रेम में यदि किसी को रोब पूवर्क खाना खाने को कहें तो अच्छा लगेगा। क्योंकि आप जानते हैं कि किसी को आपकी चिंता है, कोई आपको प्रेम करता है। ऐसा व्यक्ति आपको अच्छा लगता है आप ये नहीं चाहते कि किसी को आपकी चिंता न हो। किसी व्यक्ति के प्रेम के बारे में समझते ही आप भी उसकी भावनाओं का सम्मान करने लगते हैं। दोष भावना से भी आपको ग्रस्त नहीं होना। आपको सदा अति हल्के मूड में रहना है।

बहुत समय पूर्व इस संतुलन की रचना की गई। राधा–कृष्ण के समय में। राधा शक्ति थी तथा कृष्ण उसके अभिव्यक्ति कर्ता। इसे आप ऊर्जा और गतिज्य (काईनेटिक) कहते हैं। लोग केवल कृष्ण के विषय में ही जानते हैं परन्तु राधा ही शक्ति थीं। कंसवध के लिए कृष्ण को राधा से कहना पड़ा। राधा ने ही सभी कुछ किया। राधा ने नृत्य किया और कृष्ण ने उसके थके हुए पैर दबाए। राधा क्यों नाची है? क्योंकि उसके नाचे बिना कार्य न हो पाता। अतः यह एक दूसरे पर निर्भर हैं। उतना ही निर्भर है जितना प्रकाश के लिए दीपक और बाती एक दूसरे पर। इतनी बात समझ जाने पर यह संतुलन पूर्णतया सुव्यवस्थित हो जाता है। यह संतुलन परमात्मा तथा उसकी शक्ति के मध्य होता है। आप इसकी कल्पना नहीं कर सकते कि यह किस प्रकार केवल एक है। उसकी शक्ति, उसकी इच्छा ऐसे ही है जैसे परमात्मा। बिल्कुल कोई अन्तर नहीं।

पर आप मानव असं घटित हैं– आपकी इच्छा भिन्न है, विचार भिन्न हैं हर चीज़ असंघटित (डिसइन्टैग्रेटिड) है। यही कारण है कि विवाह भी असंघटित हैं। परस्पर मिश्रण ही पूर्ण एकीकरण (संघटन) है। जब तक आप में संतुलन एवं एकीकरण की पूर्ण समझ है तो चाहे पुरुष को कार्य करना हो या स्त्री को– कोई भी चिंता की बात नहीं। निः सन्देह स्त्रियां जिम्मेदार हैं, वे परिवार की शोभा हैं। स्त्री को दयामय होना चाहिए। पुरुषों की तरह आचरण करना स्त्री के लिए अशोभनीय है। पुरुष को स्त्री जितना दयामय होना आवश्यक नहीं पर उसे क्रूर भी नहीं होना। पुरुषों को अन्य स्त्रियों में दिलचस्पी नहीं लेनी चाहिए। ऐसा करना अनुचित है। पुरुषों का चूहों की तरह आचरण करना भयानक है और पौरुष –विहीन। इस प्रकार के आचरण का अर्थ है कि वे स्त्रियों के दास हैं। वे केंचुओं से भी बदतर हैं।

अतः पुरुष को पुरुष होना है राम की तरह। आप उसके जीवन के विषय में जानते हैं। उन्होंने किस प्रकार अपनी पत्नी

से प्रेम किया और अपने ब्रह्मचर्य का सम्मान किया। जिस पुरुष को अपने ब्रह्मचर्य का सम्मान नहीं वह पुरुष ही नहीं, वह तो केचुंआ है। अतः पुरुष में चरित्र होना चाहिए, उसमें साहस, शौर्य तथा रक्षा–भाव होना चाहिए। घर में यदि चोर आ जाए और पुरुष स्त्री से कहे कि " तुम दरवाजा खोल दो और मैं छुप रहां हूं " और चोरों के चले जाने पर रौब दिखाए तो यह तो अनुचित है। पुरुष को रक्षा करनी चाहिए देखभाल करनी चाहिए। अतः कभी–कभी यदि पुरुष थोड़ा सा अशिष्ट भी हो जाए तो कोई बात नहीं क्योंकि उसे ही स्थिति का सामना करना है। आप कह सहते हैं कि पुरुष कांटे सम है तथा स्त्री फूल सम।

अब कांटे और फूल में से आप फूल बनना चाहेंगे। परन्तु पति–पत्नी के मध्य आप काटां बनना पसंद करेंगे। यह गलत है। पुरुष को रक्षा करनी है तथा पारिवारिक जीवन पर होने वाले आक्रमणों की देखभाल करनी है। पर लोग परिवार में गलत लोगों की आने की आज्ञा दे देते हैं। रोब से गलत स्त्रियों को परिवार में ले आते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों का विरोध होना चाहिए।

अतः आप स्पष्ट देखते हैं कि हर चीज के दो पहलू है, यदि प्रेम में कार्य किया गया है तो यह पूर्णोचित है, पर यदि यह रोब जमाने के लिए किया गया है तो यह मूर्खता–पूर्ण है। रोब क्यों जमाना है? रोब शब्द मुझे समझ ही नहीं आता। क्या गाड़ी के दो पहिए एक दूसरे पर रोब जमाते हैं? क्या वे ऐसा कर सकते हैं? यदि एक प्रभुत्व जमाता है या कहिए कि एक पहिए का आकार बड़ा हो जाता है तो यह गोलाई में ही घूमता रहेगा। इसमें प्रभुत्व जमाने का तो प्रश्न ही नहीं है। प्रश्न तो परस्पर एकाकारिता, सूझ–बूझ और पूर्ण सहयोग का है। यह गुण समाज तथा परिवार में फैल जाना चाहिए।

वे विवाह जो समाज के लिए लाभप्रद नहीं वे व्यर्थ है। हमारे यहां भी इस प्रकार के बहुत से विवाह होते हैं, विवाह करवा कर लोग परस्पर प्रसन्नता पूर्वक रहते हैं। बस समाप्त। सहज–विवाह पूरे समाज को परिवर्तित कर देंगे, अपने आनन्द तथा प्रसन्नता से ऐसा घर बनाएंगे जहां हर सहजयोगी आ सकेगा और उसकी देखभाल होगी। कुछ लोग कहते हैं कि किसी ने मेरे लिए कुछ नहीं किया। आपने किसी के लिए क्या किया? इस बात को जब आप समझने लगेंगे तो अच्छा होगा।

सामान्यतः यदि किसी स्त्री की परवरिश ठीक प्रकार नहीं हुई होगी तो वह अतिमिथ्याभिमानी, स्वार्थी तथा आत्मकेन्द्रित होगी। पुरुष भी ऐसा हो सकता है। पर ऐसी स्त्री अपना धन किसी और पर नहीं खर्चना चाहेगी। वह नहीं चाहेगी कि कोई उसके घर पर आए और उसको साथ हिस्सा बांटे। पर हमें देखना है कि ऐसा प्रेम में किया है या नहीं। मान लो पति अपने मित्रों का लेकर आ जाता है और पत्नी खर्चे के कारण उनका आना पसन्द नहीं करती। ऐसा करना गलत है। आपको अपने प्रेम की वर्षा दूसरे लोगों पर करनी चाहिए। आवश्यक नहीं आप बहुत पैसा खर्चें। आप उनसे करुणामय व्यवहार करें। उन पर थोड़ा सा पैसा खर्चने में भी कोई हानि नहीं। सहज में आकर भी हम धन तथा प्रेम खर्चने के मामले में बहुत सतर्क हैं। हममें इतना भय है।

सहजयोग में दूसरों पर रोब बिल्कुल नहीं जमाया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ जब मैं आपको कुछ बता रही हूं तो बाहर का व्यक्ति सोच सकताहै कि मैं आप पर प्रभुत्व जमा रही हूं क्योंकि मैं आपकी कमियों के बारे में बता रही हूं। उसके पीछे छिपे प्रेम तथा करुणा को वह नहीं देखता। अतः कभी मत सोचिए कि कोई व्यक्ति आप पर प्रभुत्व जमाता है।

आप पर कैसे प्रभुत्व जमाया जा सकता है? आप तो आत्मा हैं। आपके अहं को चोट पहुंच सकती है पर आप तो आत्मा हैं। आत्मा पर प्रभुत्व नहीं जमाया जा सकता। आप आत्मा हैं। क्या आप अपनी अत्मा को अनुभव कर रहे हैं? यदि आप ऐसा कर रहे हैं तो कोई आप पर प्रभुत्व नहीं जमा सकता। परन्तु यदि आप सदा यही सोचते हैं कि आप पर रोब जमाया जा रहा है तो आपकी दुर्दशा हो जाएगी। अतः अभी से आप महसूस करें कि आप आत्मा हैं तथा आपका पति या पत्नी भी आत्मा है। आप दोनों में परस्पर सम्मान भावना उदय होनी चाहिए क्योंकि आप दोनों ही सन्त हैं, सहजयोगी हैं।

आप एक दूसरे का सम्मान करें क्योंकि आप सहजयोगी हैं। साक्षात्कारी होने के कारण लोग आपका सम्मान करते हैं। आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति से पूर्व आप साक्षात्कारी लोगों के विषय में क्या सोचते थे? शायद आपको याद नहीं? बिना अहंग्रस्त हुए आपको सभी आत्म साक्षात्कारी लोगों का सम्मान करना चाहिए क्योंकि वे आपकी मां के बच्चे हैं। परस्पर बातचीत करते हुए आपको यह बात याद रखनी है ।

पति -पत्नी के विषय में अपने पुराने विचार आपको त्याग देने हैं। सहज से पूर्व के विवाह सम्बन्धों में तो आप बिना परस्पर विश्वास के एक दूसरे के अधिकारों के बारे ही सोचते थे। अब अधिकाधिक विश्वास कीजिए। प्रेम, तथा विश्वास करने में, ईमानदार, करुणामय होने में तथा सेवा भाव में परस्पर मुकाबला होना चाहिए। एक दूसरे पर प्रभुत्व जमाने, परस्परभय तथा व्यर्थ की बातों के स्थान पर अच्छी बातों में मुकाबला कीजिए तो आपको अच्छा फल मिलेगा।

एक और बात जो मैं करना चाहती हूं वह यह है कि विवाह के बाद आप स्वयं को दुखी न बनाएं और न ही निराशावादी

कवियों की कविताएं पढ़े। सहजयोगी होने के नाते आपने एक दूसरे के बीते दुखों का आनन्द नहीं लेना। अब आपको कोई दुख नहीं है। सभी दुखः समाप्त हो गए हैं । नई चेतना सम्पन्न आप अब नए लोग हैं। अतः पुरानी बातों को भूलकर एक दूसरे के साथ का आनन्द लें। सहज योगियों को लोर्ड बायरन या शैली नहीं बनना। अतः याद रखिए कि बैठकर अपने दुखों की बात मत कीजिए, आपको किसी प्रकार का कोई दुख नहीं।

आप आत्मा हैं, आप अपने तथा दूसरे लोगों के लिए आनन्द का साधन हैं। अतः बैठकर रोइए धोइये मत। मै नहीं समझ पाती कि आप अपनी आत्मा को क्यों नहीं जानते। क्या आप अपनी आत्मा को नहीं पहचानते ? अब तो आप जानतें हैं। आपके पास चैतन्य लहरियों का ज्ञान है। आप यह क्यों कहते हैं कि मैं नहीं जानता ? आत्मा को पहचानने से ही आप रह सकते हैं तथा दूसरों को भी आनन्द प्रदान कर सकते है। आपमें यह गुण होना चाहिए नहीं तो सभी कुछ व्यर्थ है। हर विवाह को मैं अति सुन्दर बनाने का प्रयत्न करती हूं, पर अन्त में एक उत्साह विहीन जोड़े को बैठकर चिड़चिड़ाते हुए पाती हूं। तब उनसे उत्पन्न होने वाले बच्चों की भी कल्पना कीजिए। वे भी सोचेंगे कि कैसे चिड़चिड़े माता पिता हैं। हे परमात्मा हमें इन बिलखते हुए बच्चों से बचाओ।

अतः इस प्रकार के दृष्टिकोण से मेरी आशाओं पर पानी मत फेरिए।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

शोभनीय स्थिति की तैयारी

विन्चैस्टर – 17.5.1980

आपका दृष्टिकोण परस्पर मेल–मिलाप तथा प्रेम को बढ़ाने वाला होना चाहिए, रुमानी भावनाओं को प्रोत्साहित करने वाला नहीं। और उससे भी बुरा है दायीं ओर को झुककर नीरस (शुष्क) हो जाना। शुष्क गले से आप बोल तक नहीं सकते। कुछ लोग अपने पति/पत्नी से मनोवैज्ञानिक चाल चलते हैं और उससे बातचीत करना बंद कर देते हैं। मैं आपको बताती हूं कि यह जीवन का भावनात्मक पक्ष है।" मैं उससे बात नहीं करूंगा, उससे बोलूंगा नहीं"। वे इस प्रकार नीरस आचरण करेंगे। इससे भी आनन्द का वध होता है। व्यक्ति या तो कोई कार्य बहुत अधिक करता है या बिल्कुल नहीं करता। या तो आप बहुत अधिक चीनी खाते हैं या बिल्कुल नहीं खाते। जिस प्रकार चाय का पूरा मजा लेने के लिए एक विशेष मात्रा में चीनी आवश्यक है उसी प्रकार जीवन में भी न तो बाहुल्य होना चाहिए और न ही अभाव।

नव–विवाहिता स्त्रियां (भारतीय) के लिए पति ही सभी कुछ हो जाता है। बाकी सभी कुछ शून्य हो जाता है। ऐसी स्त्रियां निरर्थक हैं। पत्नियों के पीछे दीवाने पतियों का जीवन भी व्यर्थ है। अतः हर चीज का एक संतुलित दृष्टिकोण लीजिए। आपकी पत्नी को प्रेम करने वाला व्यक्ति आप ही में है। आपकी पत्नी भी आप ही में है। आप ही अपनी पत्नी है और आपही अपने पति। अतः यदि आपकी सांसारिक पत्नी आपकी मानसिक पत्नी के स्तर की नहीं है तो आपको परेशान होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि आपके अन्दर की पत्नी तो सदा आपके साथ है। एक बार यह समझ विकसित होने पर पति–पत्नी सम्बन्ध आदर्श हो सकते हैं।

जब तक आप अपने आदर्शों को अपनी पत्नी पर नहीं थोंपते, या पत्नी इन्हें अपने पति पर नहीं थोंपती तब तक विवाह कोई गंभीर समस्या नहीं बनता। पत्नी–पत्नी तथा पति–पति बने रहें। पत्नी पति न बने और पति पत्नी न बने। ऐसा यदि हो जाए तो इसे सुधारना कठिन है।

अब मुख्य बात यह है कि आपका विवाह बच्चे उत्पन्न करने के लिए हुआ है। अब आपको रोमियों–जूलिएट बन कर नहीं रहना। आपको बच्चे होने चाहिए। सहजयोगियों के यहां जन्मे बच्चे जन्म–जात आत्मसाक्षात्कारी आत्माएं होंगी। महान आत्माएं या शक्ति। इसी कारण आपका विवाह हुआ है और इसी कारण आपने बच्चे उत्पन्न करने हैं। अपने बच्चे को सम्मान पूर्वक परवरिश कीजिए, उन्हें बिगाड़िए नहीं, सहजयोग के प्रेम में उन्हें विकसित कीजिए।

इसका आरंभ हमने हंसा चक्र से किया। हंसा चक्र आपके दायें और बायें दोनों ओर हैं। बायां स्त्री तथा दायां पुरुष हैं। ये हंसा चक्र पर मिलते हैं। इनमें असंतुलन होने पर समस्या होती है। उन्हें समान होना होगा। परन्तु वे एक से नहीं है। बायां–बायां है और दायां–दायां। अतः दायें को दायीं ओर तथा बायें को बायीं ओर होना चाहिए। हंसा पर आकर वे विवाहित होते हैं अतः पत्नी को पहले अपने कर्तव्य करने चाहिएं और पति को पहले अपने। तब जीवन के गौण कार्य सूझ–बूझ से मिल कर करने चाहिए। यह नहीं हो सकता कि पत्नी काम पर जाए और पति बच्चे उत्पन्न करे। वह ऐसा नहीं कर सकता। अतः दोनों का अपना–अपना कार्य महत्वपूर्ण है।

मेरे विचार में मां बनना अति महत्वपूर्ण हैं। आज यदि आपकी मां न होती तो कौन से पिता ने यह (आत्म साक्षात्कार का) कार्य किया होता? कौन से पिता ने? क्या आप किसी के बारे में सोच सकते हैं? हो सकता है स्वर्ग में बैठे परमात्मा ने किया होता। परन्तु पृथ्वी पर अवतरित किसी पिता का सहजयोगियों पर कार्य करना? ऐसा कोई पिता मुझे दिखाइये। ऐसे किसी भी पिता के शांति पूर्वक बैठकर सारा तमाशा देखने को तो आप कह सकते हैं परन्तु कार्य कौन करेगा? मां ही गंदे कपड़े तथा रुमाल धो सकती है। वह इस कार्य को प्रेम तथा ध्यान से करती है। मां ही जानती है कि किस प्रकार बच्चों को पालना है, यह मां का ही कार्य है। यह मां का कार्य है, मां ही इसे कर सकती है। पिता आराम से स्वर्ग में बैठ सकते हैं। सारा श्रेय परमात्मा को जाता है जबकि मां बिना किसी श्रेय के सारा कार्य कर रही हैं। कोई बात नहीं। जैसा भी है सब स्वीकार किया जाना चाहिए।

हंसा चक्र पर यह विवेक आना आवश्यक है कि हम दायीं तथा बांयी दोनों नाड़ियों को संतुलन में लाएं।

पुरुष –पुरुष है तथा स्त्री–स्त्री। जब पुरुष स्त्री पर या स्त्री पुरुष पर स्वामित्व–जताने लगे तो संतुलन बिगड़ जाता है। स्त्री अतिमहत्वपूर्ण है। स्त्री के बिना आप उत्पन्न ही न हो पाते। ठीक बात है। स्त्री के बिना आप साक्षात्कार न पा सकते। पुरुष भी अति महत्वपूर्ण है। पुरुष के बिना स्त्री का कोई अर्थ नहीं। परमात्मा के बिना शक्ति अर्थ विहीन है। शक्ति किसके लिए

कार्य–रत है? किसके लिए यह सभी कुछ कर रही है? परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए। अपने अन्दर निहित दोनों अस्तित्वों (स्त्री एवं पुरुष) के संतुलन, सूझबूझ, परस्पर सम्मान तथा सहयोग से आपका हंसा चक्र ठीक हो जाएगा। आपको अधिक अच्छा लगेगा।

अत्यधिक भावनात्मक बात होने के कारण आपको विवाह, स्त्रियों पुरुषों तथा अपने बारे अपने विचारों को सुधारना होगा। जिनके वाम पक्ष कमजोर हैं उन लोगों को जुकाम तथा पित्त संबंधी समस्याएं रहती हैं। भावनात्मक पक्ष की उचित रुप से देखभाल तथा पोषण होना चाहिए। व्यक्ति को याद रखना है कि उसका सम्मान सबसे महत्वपूर्ण है। सम्मान–विहीन कोई भी चीज प्रेम नहीं हो सकती। प्रेम गरिमामय है और यदि आप गरिमा में रहते हैं, तो आप हैरान होंगे, कि, आप बहुत सी समस्याओं का समाधान कर लेंगे।

प्रश्न–– आप स्त्रियों का क्या भविष्य देखती हैं?

श्री माता जीः महान। स्त्रियों को पुरुष बनने का प्रयत्न बिल्कुल नहीं करना चाहिए। ऐसा करना भयानक है। अपनी गरिमा में स्त्री तो स्त्री है। वह पृथ्वी मां की तरह है। अपनी शक्यिों को वह नहीं जानती, यही समस्या है। पुरुषों से झगड़ने वाली कोई बात नहीं। स्त्री–पुरुष एक ही रथ के दो पहियों सम हैं। दोनों समान हैं पर एक से नहीं है। स्त्री को यदि अपनी मातृत्व की शक्ति का ज्ञान हो तो वह पुरुष से कहीं अधिक गतिशील है।

असुरक्षा की भावना के कारण भी स्त्री तथा पुरुष अति अशोभनीय ढंग से एक दूसरे के प्रति आकर्षित रहते हैं। आपको अपनी अबोधिता तथा गरिमा में उठना है। इस प्रकार का घटिया प्रदर्शन आपने नहीं करना। आप जानते हैं कि इस प्रकार का जीवन अतिभयानक होता है।

जैसा कि मैने कहा, पहले पिता, फिर पुत्र और अब मी। स्वर्ग में कोई नारी–आदोलन नहीं है। हर व्यक्ति पूर्ण सामान्जस्य में है। फिर एसन की पुस्तक (अध्याय) में कहा गया है कि होली घोस्ट (चैतन्य लहरी) मां थी।

कुण्डलिनी आपके अन्दर मातृ–तत्व है, होली घोस्ट है। नए धार्मिक विचारों का विकास शुरु करते हुए हमने 'पिता' की बात की। फिर पुत्र की। और होली घोस्ट अचेतन बना रहा। आंज की स्थिति में, आप देखते हैं, कि एक नारी वादी चेतना आ रही है। परन्तु इसे अति गलत रास्ते पर ले जाया जा रहा है।

स्त्री या मातृ–तत्व गर्भ तत्व है। धरा मां का तत्व है जो हमारा पोषण करता है, विकास करता है तथा अपनी चुम्बकीय शक्ति से हमारा मार्ग–दर्शन करता है। परन्तु यदि चेतना को दायीं ओर को होना है या पुरुषत्व–पूर्ण होना है तो पहले भी बहुत से पुरुष हो चुके हैं। यदि स्त्रियां पुरुष बनने का प्रयत्न कर रही हैं तो यह पैंडुलम (लोलक) का एक छोर से दूसरे छोर तक आना है। परन्तु चेतना तो मां की है जिसकी अभिव्यक्ति उसे अब करनी है।

वह चेतना व्यक्ति को करुणामय, स्नेहमय, पोषक तथा सुखदायी बनाती है। पर हम इस साधारण सी बात को नहीं समझते कि जब तक यह कार्य पूर्ण नहीं हो जाता अपनी चेतना में अभी हम पूर्ण नहीं हुए।

पचास वर्ष पूर्व तक आक्रमण कारी को अभिनेता समझा जाता था। पर आज यह सम्मान करुणामय तथा स्नेहमय व्यक्ति को प्रात है। इन दोनों तत्वों के कार्यान्वित होने पर ही कुण्डलिनी जागृत होती है।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

भावी वधुओं को शिक्षा

अभी तक आप कुमारी थी। अब आप एक भिन्न प्रकार के जीवन, विवाहित जीवन में प्रवेश कर रही हैं। विवाह को सफल बनाने का महान उत्तरदायित्व आप पर है। आपका आचरण ऐसा होना चाहिए जिससे कि आप में मातृत्व की रचना हो तथा जो आपके पति तथा बच्चों को अनुशासित कर सके।

आपने अपनी मां को तो देखा है, आपकी मां कभी कभी एक ही स्थान पर नौ–दस घंटे लगातार बैठी रहती है। इस स्थान से बाहर तक नहीं निकलती। पर मैने देखा है कि ध्यान करते हुए भी लोग एक स्थान पर दो घण्टे भी नहीं बैठ सकते। वे खड़े होकर अन्य सब लोगों को परेशान करते हुए बाहर आ जाते हैं। यह दर्शाता है कि हममें अनुशासन की कमी है, तथा यह कि न तो हमारे माता पिता ने हमें अनुशासन सिखाया और न हमने स्वयं को अनुशासित किया।

सर्वप्रथम आपको अपने स्वभाव को पूर्णतः अनुशासित करना है। अनुशासित स्वभाव ही इस बात का प्रतीक है कि आप लोग ही पृथ्वी मां के प्रतिनिधि हैं जिसमें अपने विवेक को अभिव्यक्त करने की विशेष शक्ति तथा बुद्धि है। आप सब को अत्यंत सावधान रहना है क्योंकि आपके हर कार्य का प्रभाव पूरे परिवार तथा पूरे सहजयोग पर पड़ता है। विवाह हो जाने पर, आपने समझना है कि आप धरा मां हैं, और आपका कार्य देना है, आपमें देने की शक्ति है। अन्तरनिहित अपनी बहुत सी शक्तियों के कारण आप दे सकती हैं। क्योंकि आप में देने की शक्ति है इसलिए आप पुरुषों से श्रेष्ठ हैं। अतः आप का अहं हर समय आपके आड़े नहीं आना चाहिए। तभी आप स्त्रीत्व का आनन्द ले सकेंगी।

अच्छी माताएं, अच्छी पत्नियां तथा अच्छी सहजयोगिनियां बनने का प्रयत्न कीजिए। विवाह के पश्चात अपने पतियों को सहजयोग से हटाने वाली स्त्रियां अति अभिशप्त होती हैं। दूसरो से मुधर वाणी से बात कीजिए, सावधानी पूर्वक कोई भी बात कहें। आपको जिम्मेवार बनना है। आप विशेष व्यक्ति हैं कि सहजयोग में आपका विवाह हुआ।

मैं आशा करती हूं कि आप सदा इस बात का ध्यान रखेगें।

गृहलक्ष्मी अति शक्तिशाली संस्था है। भारत में गृहलक्ष्मी को महानतम माना जाता है। प्रधानमंत्री या उससे ऊंचे पद से भी महान। अध्यात्म में गृहलक्ष्मी का स्थान सर्वोच्च है, पर स्त्रियों को भी पूर्ण गृहलक्ष्मी होना है। अर्थात उन्हें विशाल हृदय, प्रेममय तथा समर्पित व्यक्तित्व की बनना है।

गृहलक्ष्मी की बहुत सी कथाएं हैं। भारत में हजारों कथाओं में स्त्रियों की शक्तियों का वर्णन है। स्त्री को शक्ति का अवतरण माना जाता है। पर गृह लक्ष्मी उनमें सबसे अधिक शक्तिशाली है। वह प्रेम, करुणा तथा क्षमा की महान शक्ति है। स्त्रियों को अत्यंत धार्मिक तथा पवित्र होना है। उन्हें स्वभाव से ही निश्छल होना है। चालाक नहीं।

मान लीजिए कि यदि मैं पतली हो जाऊं तो मेरे सारे चक्र अनावृत हो जाएंगे और मैं कठिनाई में फंस जाऊंगी। अतः अपने चक्रों को सुरक्षित रखने के लिए मुझे पर्याप्त जल तथा चर्बी की आवश्यकता है। यह कार्य पर निर्भर है। मां के लिए मांसल होना आवश्यक है। मां यदि मांसल न हो तो बच्चे भी हड्डियां महसूस करते हैं।

स्त्रियां यंत्रवत तथा नीरस हो जाती हैं। मैने मां का वर्णन करती हुई एक अंग्रेजी कविता पढ़ी थी, "मेरी मां एशिया सम विशाल"। मां के विषय में एक सुन्दर कविता। अतः मां का अभिनेत्री सम होने का विचार मूर्खतापूर्ण है। परन्तु सम्मान योग्य कार्य करने वाली स्त्रियों के असम्मानित होने के कारण स्त्रियां इस प्रकार की मूर्खता करने लगती हैं। इस देश में स्त्री का दर्जा वैश्या का है। इसका परिणाम क्या होगा? वे भी वैश्या की तरह आकर्षक बनना पसंद करेंगी।

मेरा अभिप्राय है मातृत्व ही स्त्री का सौंदर्य है। मातृत्व ही सुन्दरता है। व्यक्ति को प्रकृति के विरुद्ध नहीं चलना चाहिए।

इस देश में गृहस्वामिनी को सम्मान नहीं दिया जाता। इसी कारण लोग इस प्रकार से व्यवहार करते हैं। पर सूक्ष्म रूप से स्त्री का हर देश में सम्मान होता है। उदाहरणार्थ मैं यदि किसी पार्टी में जाऊं तो वहां श्रीमती श्रीवास्तव के रूप में मेरा सम्मान होगा। और मेरे पति की सचिव भी यदि वहां हो तो भी वह मेरे पति के साथ नहीं बैठेगी चाहे वह मुझ से भी सुन्दर क्यों न हो। समाज में पति के पास कौन बैठेगा? यह मेरा प्रश्न है।

हैम्बर्ग की एक घटना है। कैबिनेट सचिव की पत्नी अत्यधिक सुन्दर तथा आधुनिक वेशभूषा पहनने वाली थी। हम सब को एक रात्री भोज पर बुलाया गया। किसी कारण वह अपने पति के साथ न आकर अलग से आयी। अब सभी स्त्रियां अपने पतियों के साथ बैठी। पर उसका स्थान खाली था। उसके पति ने अपनी पत्नी के विषय में पूछा तो उसे बताया गया कि वे तो नहीं आयीं।

सचिव ने कहा नहीं वह तो यहां आ चुकी हैं। नहीं श्रीमान, आपकी सचिव तो आई हुई हैं, हम उनसे पूछते हैं। यह सचिव लगने वाली स्त्री कोई और न होकर उनकी पत्नी ही थी जिन्हें अपनी वेशभूषा के कारण सचिव समझ लिया गया था। वह उन्हें समझा न पाई थी कि वही उनकी पत्नी है। कितनी शर्मनाक बात थी। राजनैतिक स्तर के लोग भी ऐसी स्त्रियों को पसंद नहीं करते।

मैं एक बार श्रीवास्तव साहब के कार्यालय में गई तो मुझे देखकर लोग अपने कोटों के बटन बंद करने लगे। मैने अपने पति से इसका कारण पूछा तो कहने लगे कि अचानक आपको अपने सामने पाकर वे ऐसा करने लगे क्योंकि वे आपका सम्मान करते हैं। आपके चेहरे पर सम्माननीयता को वे देख सकते हैं। आप सी स्त्री को देखना उनके लिए अतिसुखद है।

बाह्य दिखावा अधिक महत्वपूर्ण नहीं। आन्तरिक भाव तथा पूर्ण व्यक्तित्व महत्वपूर्ण हैं। अभिनेता या अभिनेत्री सम लगने वाला सहजयोगी कभी भी अन्य लोगों को प्रभावित नहीं करेगा। झूठ–मूठ के गुरु भी अपने शिष्यों को सिखाते रहते हैं कि किस प्रकार शान्त प्रतीत होना है। पोप भी ऐसा ही था, लामा भी ऐसे ही होते हैं। वे अपने को शांत दर्शाने का प्रयत्न करते रहते हैं। पर सहजयोगी सर्व साधारण लगते हैं। व्यक्ति को पूर्णतः गरिमा–मय होना चाहिए। ऐसा व्यक्ति स्वतः ही, स्वभाविक रुप से अपने चरित्र द्वारा दूसरे लोगों को प्रभावित करता है। वह पाखण्डी नहीं वास्तविक सहजयोगी है। इसका अर्थ यह भी है कि आप अपने अस्तित्व का सम्मान करें। जैसे आपका आचरण ऐसा होना चाहिए जिससे यह न लगे कि आप अपनी पवित्रता और अपने धर्म का सम्मान नहीं करते। इन सबका सम्मान होना चाहिए। परिणामस्वरूप आप में अद्वितीय भाव आ जाएंगे।

पश्चिमी देशों की यही अवस्था है हमें यह बात समझनी चाहिए। अन्दर के स्थान पर बाह्य का बहुत ध्यान किया जाता है। इसके प्रति हमें बहुत सावधान रहना है। कल्पना कीजिए कि आज तो स्त्रियां वैश्याओं सम है और कल आप उन्हें अध्यापिकाओं के रुप में पाएं। भारत में हम ऐसी बात की कल्पना भी नहीं कर सकते–असंभव।

मैं एक अन्य बात से भी हैरान थी। मेरे विचार से एक महिला पचास–चालीस वर्ष की रही होगी। अपने पहले पति को उसने तलाक दे दिया तथा अब वह नया पति चाहती है। भारत में यदि कोई लड़की इक्कीस वर्ष की आयु में विधवा हो जाए तो भी वह दूसरे विवाह की चिंता नहीं करती। इतनी ऊंचाई है उनमें। बिना विवाह के ही वह प्रसन्न रहती हैं। पर यहां तो आप स्त्रियों की कल्पना ही नहीं कर सकते क्योंकि आपकी महिलाएं भी पुरुषों सम हैं।

एक बार पत्नी की मृत्यु हो जाने पर बहुत से भारतीय पुरुष पुनर्विवाह की चिंता नहीं करते । वे पुनः विवाह करते ही नहीं। पर यहां तो चालीस–पचास साठ वर्ष की आयु में भी उन्हें पत्नी चाहिए। अर्थात साठ वर्ष आयु की मां पांच–छः बार विवाहित होती है। यह मूर्खता पूर्ण है।

सम्बन्धों का (पूर्ण) गहन न होना ही समस्या है। सम्बन्ध यदि पूर्ण हों तो यह बहुत ही गहन होंगे। यह इतना आन्तरिक रिश्ता है कि आप किसी अन्य स्त्री या पुरुष की ओर दौड़ने की बात तक नहीं सोचते। विवाह के बाद सारी दौड़ समाप्त हो जाती है। विवाहित जीवन को समझते ही आपको लगेगा कि आप अपने घर में आराम से हैं। जब आप किसी अन्य के घर में होते हैं तो आपको लगता है कि 'मुझे जाना है।' मुझे घर वापिस जाना है। विवाह ऐसा ही है। अब आप अपनी मंजिल पर पहुंच गए हैं। अतः स्थिर हो जाइए। मंजिल पाकर भी आप दौड़ रहे हैं। यह तो पागलपन है। आप मेरी बात को आजमाइए। इसके परिणाम देख कर आपको हैरानी होगी। आजमाकर तो देखिए।

जैसे इस्लाम में कबीले की लडाई के कारण बहुत से पुरुषों की मृत्यु हो गई पर स्त्रियां बच गई। पुरुषों की संख्या इतनी कम थी कि वैश्यावृत्ति आरंभ हो सकती थी। अतः मोहम्मद साहब ने कहा कि चार स्त्रियों से विवाह कीजिए। युवकों की कमी होने के कारण बड़ी आयु के पुरुषों को युवतियों से विवाह करने की आज्ञा भी दी गई। समाज को व्याभिचार मुक्त रखने के लिये यह सब किया गया। इसे समयाचार कहते हैं। पर समयाचार भी समय की आवश्यकताओं के हिसाब से बदलना चाहिए। इसके लिये विवेक आवश्यक है।

अपने ब्रह्मचर्य (पवित्रता) के लिये प्रसिद्ध शिवाजी को कुछ कारणों वश चार विवाह करने पड़े। पाण्डवों के अपनी मां के प्रति वचनबद्धता के कारण द्रोपदी को पांच पतियों से विवाह करना पड़ा। कृष्ण को सोलह–हजार शक्रियों (स्त्रियों) से विवाह करना पड़ा। उनके पास सहजयोगिनियां तो थी नहीं। जिस प्रकार मैं अपनी शक्ति आप लोगों के माध्यम से प्रवाहित करना चाहती हूं उसी प्रकार कृष्ण ने अपनी सारी शक्तियों को राक्षस से मुक्त करके शक्ति संचार के लिये धारण किया। पंच–तत्व भी उनकी पत्नियों के रूप में आए।

आज जनसंख्या के बाहुल्य में भी मेरे इतने सारे बच्चे हैं। लोग इसकी आलोचना भी कर सकते हैं। परन्तु लोगों की इतने बच्चे प्राप्त करने की इच्छा हास्यास्प्रद होगी। यह समयाचार है। जैसे सामान्य लगने के लिये मैं कोका कोला पी लेती हूं। पर इसका अर्थ ये नहीं कि आत्म साक्षात्कार पाने के लिये आप भी कोका कोला पीने लगें।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

हृदय से सहस्रार तक

दिल्ली–9–2–81

स्त्री को शालीन तथा गरिमामय होना चाहिये। उसे पुरुषों से प्रतिस्पर्धा नहीं करनी चाहिए। पुरुषों से मुकाबलना करना मूर्खतापूर्ण है। भारतीय महिलाएं इस बात को समझती हैं। पर अब पुरुषों के लिए भी समझना आवश्यक है कि स्त्रियों का सम्मान करें। यदि वे स्त्रियों का सम्मान नहीं करेंगे तो उनकी बेटियों का आचरण भी निराशाजनक होगा। पिता के मुँह पर एक दिन वे तमाचा मार सकती हैं। यह बिल्कुल संभव है। इस देश में भी यह सब कुछ हो सकता है।

श्री राम दायें हृदय के स्वामी हैं। वे मर्यादा तथा सीमाओं के देवता हैं। उन्होंने मनुष्यों को जीना सिखाया। उनके जीवन का मुख्य संदेश उनका प्रेममय एवं समर्पित पति होना है। वे इतने श्रेष्ट व्यक्ति थे जिन्होंने अच्छा राजा बनने के लिये अपनी पत्नी तक को त्याग दिया।

इस देश में, जहां हम सोचते हैं कि "प्रेम महान है, स्थिति बिल्कुल विपरीत है। मैं बहुत से मंत्रियों को जानती हूं जिनकी पत्नियां परिवार पर शासन करती हैं। उनमें बलिदान की भावना नहीं है। पत्नियां इतनी महत्वपूर्ण हैं कि पतियों की भी कोई गिनती नहीं रह जाती। उनके लिये अपने बेटे–बेटियां ही अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। ऐसे लोगों को समझना चाहिये कि श्रीराम ने अपनी प्रिय–पत्नी को गर्भावस्था में त्याग दिया और उनकी याद में सन्यासी का जीवन बिताया। श्री राम का यह महान त्याग था। सीता जी ने भी अपनी गरिमा तथा सीमा में उन्हें त्याग दिया। उन्होंने राम को अपना शरीर छूने तक नहीं दिया। स्त्री सुलभ ढंग से वे आलोप हो गई।

आधुनिक युग में ऐसा नहीं है। पति यदि पत्नी को नुकसान पहुंचा दे तो वह न्यायालय में जाएगी तथा पति को दंडित करवाएगी। माना आप अपने पति से प्रेम करती हैं तथा चाहती हैं कि वह दूसरी स्त्रियों की ओर न दौड़े। पर इसके लिये उसे जेल भिजवाना तथा दुःख देना तो ठीक नहीं।

हमें महसूस करना है कि सहजयोगियों के लिए पति–पत्नी सम्बन्ध अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। आप एक दूसरे के पूरक है। सम्बन्ध ठीक न होने पर सहजयोग कार्य नहीं करेगा। परस्पर सम्पूरकता, आपसी प्रेम, प्रेम सौन्दर्य तथा सूझबूझ महत्वपूर्ण है, स्त्री को रोबदार नहीं होना।

मैंने देखा है कि प्रेम दर्शाने के लिये लोग एक दूसरे को चूमते हैं। यह अनावश्यक है। आपका अपने पति से तदात्मय भाव आवश्यक है। पति भी उस प्रेम को महसूस करे। यही प्रेम सम्बन्ध सुन्दरतम हैं। अपने बच्चों से आपके सम्बन्ध आप तब समझेंगे जब वे कमाने लगेंगे, बेटियों के विवाहित हो जाने पर उनसे सम्बन्ध समझ आएंगे, माता–पिता से सम्बन्ध उनके वृद्ध हो जाने पर समझ आएंगे।

आप बड़े हो चुके हैं, आपकी पत्नी है। आप उनका दंभ बढ़ता हुआ पाएंगे पर अपनी पत्नी से आपके संबंध अति निजी तथा अत्यन्त बहुमूल्य हैं। इसी कारण लोगों ने इसकी प्रशंसा के गीत गाए हैं। भारतीय भाषा में किसी भी अहितकर बात को स्वीकार नहीं किया जाता क्योंकि भाषा साहित्य कलहाती है। साहित्य का अर्थ है सह + हित – अर्थात जो आपको आपकी आत्मा के साथ रख सके। जो साहित्य ऐसा नहीं कर सकता वह व्यर्थ है। अश्लील है।

पति–पत्नी सम्बन्ध अत्यंत पवित्र हैं। लोग यदि इस पवित्रता का आनन्द लेना जान सकें तो वे स्वयं पवित्र हो जायेंगे और इसका सारतत्व पा लेंगे। कुछ भी खरीदते हुए–हम शुद्ध रेशम चाहते हैं, शुद्ध हीरा चाहते हैं, शुद्ध सोना चाहते हैं। पर जब प्रेम की बारी आती है तो हम नाना प्रकार की अपवित्रता तथा विकृतियां अपनाना चाहते हैं। फिर हम कहते हैं कि "ओह मैं तो परेशान हो गया हूं। मैं इसका आनन्द नहीं ले सकता।" कारण अपवित्रता है।

सम्बन्ध की पवित्रता का आनन्द लेना चाहिए। सहजयोग में हम सन्यास में विश्वास नहीं करते क्योंकि बहुत सी महान आत्माएं पृथ्वी पर अवतरित होना चाहती हैं तथा हमें उनके आने का प्रबंध करना है। हमारे यहां अति प्रसन्न विवाहत लोग होने चाहिएं जो परस्पर प्रेम तथा सम्मान करें ताकि महान संत यहां जन्म ले सकें।

जब तक हम अपनी पत्नियों का सम्मान नहीं करते, उनकी ओर पूरा ध्यान नहीं देते तथा उनकी सहायता नहीं करते, इस देश का अनुशासन न सुधरेगा। पत्नी ही बच्चों को अनुशासित करती है। अतः उसमें सुरक्षा की भावना होनी ही चाहिए। पुरुष का मिथ्याभिमान समाप्त होना चाहिए। पुरुष का स्वयं को महत्वपूर्ण समझना गलत है। दोनों की एकता महत्वपूर्ण है। दो आंखों में से एक आंख यदि अपने को अधिक महत्वपूर्ण समझे तो कहां तक ठीक है?

दूसरों से सम्बन्ध में यदि आप में पवित्रता का भाव नहीं है तो आपको बाई विशुद्धि की समस्या हो सकती है। और आपको बहुत सी समस्याएं हो सकती हैं।

विकृत आचरण मत कीजिए। यदि आप पुरुष हैं तो पुरुष की तरह आचरण कीजिए और यदि स्त्री हैं तो स्त्री की तरह। यदि आप अपनी प्रकृति के विपरीत आचरण करेंगे तो अहितकर होगा।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

समाज तथा सहजयोग में माताओं की भूमिका

"व्यक्ति को समझना है मातृत्व अति महत्वपूर्ण है।" मां ने ही ब्रह्माण्ड की सृष्टि की, "पिता" तो केवल साक्षी थे।

श्री माता जी निर्मला देवी

माताएं समाज की जड़ों को स्थायित्व प्रदान करती हैं। यदि माताएं ही असंतुलित होंगी तो पूरा समाज ही अस्थिर होगा और आज के पश्चिमी देशों की तरह उन्नत न हो पाएगा।

माताएं किस प्रकार यह स्थिरता तथा संतुलन प्राप्त करती हैं ?

(1) सर्व प्रथम उनकी पवित्रता की रक्षा तथा सम्मान किया जाना चाहिए। ऐसा केवल स्थूल स्तर पर ही नहीं होना चाहिए ताकि वे अपनी दृष्टि तथा मस्तिष्क से पतियों के प्रति वफादार रहें। इसी प्रकार पतियों को भी चाहिए कि अपवित्र दृष्टि से अन्य स्त्रियों को न देखें और न ही उनके साथ चोंचलेबाजी करें।

समाज की दृष्टि को वासना से परे रखने के लिये स्त्रियों की वेषभूषा भी महत्वपूर्ण है। वस्त्र सुशिष्ट तथा स्त्री सुलभ होने चाहिएं, वाहयात किस्म के नहीं।

विवाह से पहले अपना सतीत्व खो देने वाली युवती का विवेक भी खो जायेगा। इसके बाद उसका जीवन अहं वृद्धि करने वाला रोमान्स मात्र रह जाता है जिसका प्रेम से कोई संबंध नहीं होता तथा जो अध्यात्मिक उन्नति के लिये कोई स्थान नहीं छोड़ता।

(2–3) मोज़ज़ प्रदत्त दस धर्मों तथा आदि गुरु दत्तात्रेय के अवतरणों द्वारा दी गई शिक्षाओं के आधार पर पारिवारिक–जीवन–धर्म स्थापित होना चाहिए।

अध्यात्मिक विकास की ओर ले जाने वाली शुद्ध विद्या ही इन शिक्षाओं को सीमाबद्ध करती है।

दूसरे शब्दों में उचित–अनुचित आचरण का निर्णय करके उचित–अनुचित का ही अनुसरण करना चाहिए। इस प्रकार परिवार में बढ़ते हुए बच्चे माता–पिता के उदाहरण तथा उन्हें दी गई शिक्षा द्वारा उचित आचरण सीखेंगे।

क्षमा–भाव तथा दुलारपूर्वक बच्चे को लगातार सुधारना मां का कार्य है। प्रेम पूर्वक बच्चे के सम्मुख उचित–आचरण–विधि का प्रदर्शन करना सर्वोपरि है।

बच्चे का केवल शारीरिक पोषण ही आवश्क नहीं, उसे भावनात्मक सुरक्षा भी दी जानी चाहिए। जिससे पारिवारिक जीवन की धार्मिक पृष्ठभूमि में उसका अध्यात्मिक विकास हो सके।

(4) पत्नी का पति से सम्बन्ध प्रेममय तथा आज्ञाकारी पत्नी सीता जी के श्रीराम से सम्बन्धों के आधार पर होना चाहिए।

स्त्रियों को चाहिये कि पतियों का ध्यान रखें, उनका पोषण करें तथा उन्हें व्यवस्थित गृहस्थी दें। पसंद का भोजन पतियों को दें और उनके प्रति न तो आक्रामक हों और न ही उन पर रोब डालें। जहां तक संभव हो पति धनार्जन करे तथा पत्नी घर चलाए।

पति को चाहिए कि बच्चों के विकास में पत्नी की सहायता करे, पत्नी को आर्थिक तथा भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करे तथा उसके प्रति पूर्णतया वफादार रहे।

उनके सम्बन्ध प्रेममय होने चाहिएं, वासना मय नहीं। परस्पर प्रेम प्रदर्शन पवित्र तथा निजी होना चाहिए। सबके सम्मुख प्रेम प्रदर्शन नहीं होना चाहिए।

पति पत्नी को एक–दूसरे से सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए ताकि इसे देखकर बच्चे भी माता–पिता का सम्मान करते हुए विकसित हो सकें। इस प्रकार का आचरण बच्चों में आत्म सम्मान विकसित करने के लिये वातावरण प्रदान करेगा।

(5) अपने संबंधों में हर महिला को पूर्ण पवित्रता बनाए रखनी चाहिए जिससे कि सच्चे बहन–भाई सम्बन्ध विकसित हो सकें। स्त्री को चाहिए कि पति को अपनी सम्पदा बनाने के स्थान पर दूसरों से उसके पिता तथा भाई के सम्बन्ध का आनन्द भी लें। पति के दूसरों से सम्बन्ध भी पवित्र होने चाहिएं, उनमें कोई ईर्ष्या नहीं होनी चाहिए।

परिवार के बुजुर्गों का सम्मान होना चाहिए तथा बच्चों का अपमान नहीं होना चाहिए।

माताएं अपने बच्चों को अनुशासित करें क्योंकि आत्म साक्षात्कारी होने के कारण उनके बच्चों में अहं बहुत अधिक बढ़ सकता है। ये बच्चे देवी–देवता नहीं हैं। जब भी आवश्यक हो उन्हें सुधारा जाना चाहिए।

(6) मां को अपने अंदर क्षमा तथा करुणा के गुणों को विकसित करना चाहिए और सभी बच्चों के साथ अपने बच्चों की तरह प्रेम तथा करुणा का आचरण करना चाहिए।

(7) अंत में, आदि–शक्ति के हमारे साथ पृथ्वी पर होने की अथाह कृपा हम पर हुई है। मां के रूप में आदि शक्ति का अवतरण महानतम है।

स्त्री रूप में जन्मी हम सब भाग्याशाली महिलाओं को अपने रोजमर्रा के जीवन में न केवल उनके उदाहरण पर चलना है बल्कि अपनी कुण्डलिनी पर ध्यान लगाते हुए अपनी जड़ों को गहरा करना है और श्री माताजी के गुणों को अपने रोम–रोम में गहन–आत्मसात करना है।

दैवी मातृत्व के गुणों की जीवन में अभिव्यक्ति और मां के प्रेम की चैतन्य लहरियों का प्रसार अपने घर, परिवार तथा मानव मात्र में करना हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

"यदि आप आदर्श बन जाएं तो आदर्श की शक्ति आपको इतना प्रगल्भ कर देगी कि बिना किसी के मार्गदर्शन के आप आदर्श हो जाएंगे। आपके आदर्श मशालों की तरह हैं। आपके आदर्श भी प्रकाशरंजित हो उठेंगे।"

जिस व्यक्ति में गौरी की शक्ति है, ऐसा व्यक्ति जब किसी सहज सभा में प्रवेश करता है तो सबकी कुण्डलिनी उसका सम्मान करने के लिए ऊपर उठ जाती हैं। जब आप में गौरी की शक्ति (पवित्रता) होती है तो आप निराले लगते हैं क्योंकि आपकी चमकती हुई अबोध आंखें होती हैं। जब भी आप अपनी आंखे घुमाते हैं तो आपकी एक दृष्टि से कुण्डलिनी ऊपर चली जाती है।

बिना किसी वासना या लालच के जब हमें किसी के प्रति प्रेम आता है तो वह हमारे अंदर परमात्मा का प्रेम है। परमात्मा ही उस पवित्र प्रेम की साकार मूर्ति है जो मात्र प्रेम करते हैं, जिसने हमें यह सुन्दर मानव जीवन प्रदान किया है और हमें अधिक सुन्दर बनाना चाहता है। परमात्मा ने आपके लिए इस विश्व की रचना की तथा वह चाहता है कि विश्व के सभी देशों का आनन्द आप उठाएं। वह चाहता है कि उसके साम्राज्य के नागरिक होने के नाते उसकी करूणा का आनन्द आप उठाएं।

रामायण से उद्धृत :–

महाराजा जनक ने स्वयं सीता का विवाह श्री राम से किया। उन्होने कहा, "रामचन्द्र, चन्द्र सम राम, सीता को अपनी जीवन संगिनी बना लो। उसकी ओर देखो, उसे बहुत अधिक कभी मत देखना, स्नेहिल दृष्टि से उसकी कामना करो। सीता सदा राम को प्रेम करो, पत्नी बन कर उनके साथ चलो तथा परछाई की तरह सदा उनका पीछा करो। मैं तुम्हारा विवाह करता हूं।"

जनक ने सीता से कहा, "पिता कुमारी बेटी की रक्षा करता है पर विवाहित होने पर उसे सदा स्वामी की रक्षा लेनी है।" तुम अब मुझे छोड़ रही हो। पर अपनी मां (पृथ्वी) को कभी न छोड़ना।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

सहज विवाह की कसमें

दुल्हन :– मैं तुम्हारा मूलाधार चक्र ठीक रखने में सहायक हूँगी। अपनी सारी सम्पत्ति मुझे दे दो मैं उसकी देखभाल करुंगी। आपको मेरा बनाया खाना खाना होगा या अपने भाई–बहनों द्वारा बनाया गया। यदि बाहर खाना खाना भी पड़े तो आप उसे चैतन्यित करके खाएंगे।

दुल्हन :– अपनी शारीरिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों से मैं सारा गृहकार्य करुंगी। प्रेम तथा स्नेह पूर्वक रहते हुए मैं आपकी आज्ञा पालन करुंगी। आप मेरे कार्य में मेरी सहायता करें तथा मैं आपकी सहजयोग के कार्य में सहायता करूंगी।

दुल्हन :– मैं अपना लक्ष्मी चक्र ठीक रखूंगी और आप मेरे लक्ष्मी तत्व का सम्मान करेंगे। इससे आपका लक्ष्मी तत्व ठीक रहेगा। जो भी कुछ आप घर लाते हैं उसका हिसाब आप मुझे देंगे, कुछ भी छिपाया नहीं जायेगा।

दूल्हा :– मैं तुम्हें प्रेम तथा स्नेह द्वारा प्रसन्नता तथा शांति दूंगा पर तुम्हें भी मेरी प्रसन्नता तथा शांति का विचार करना होगा। तुम मेरी आज्ञा के बिना बाहर नहीं जाओगी और मैं भी बाहर जाते हुए तुम्हें बताऊंगा। न मैं भूतकाल की बात करूंगा और और न ही इस विषय में सोचूंगा, तुम्हें भी ऐसा ही करना होगा।

दूल्हा :– सहजयोग करते हुए यदि मुझ से कोई भूल हो तो तुम्हें क्षमा करनी होगी और मैं भी ऐसा ही करुंगा।

दोनों कहते हैं :– श्री आदिशक्ति माता जी निर्मला देवी ने इस विवाह द्वारा हमें पवित्र बंधन में डाल दिया है। श्री माता जी के महायज्ञ का महान सौभाग्य हमें मिला है।

अपना स्वास्थ्य, वैभव, मस्तिष्क एवं हृदय–सभी कुछ हम उनके चरण कमलों में समर्पित कर देंगे।

हम एक दूसरे के प्रति वफादार रहने की शपथ लेंगे।

हम सहजयोग को बढ़ाने के लिये कार्य करेंगे।

अपने बच्चों की परवरिश सहजयोग में करना हमारा कर्तव्य होगा।

जय श्री माता जी

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

प्रस्थान वार्ता

रौहरी –1987

अत्यंत प्रसन्न चित्त रहने का प्रयत्न कीजिए कि आप इतने सारे लोगों से मिले, कि आपके विवाह हुए, कि आपने बहुत से विवाह देखें, कि हमने इतना अच्छा समय बिताया जिसका हर क्षण आनन्ददायी लहरियों से परिपूर्ण था।

निः सन्देह आज आप में से कुछ लोग थोड़े से खिन्न होंगे। मैं इसका कारण समझ सकती हूं कि आपके पति/पत्नी दूर जा रहे हैं। इस कारण मैं कुछ लोगों को दुखी पाती हूं। पर उनका यह दुखः परस्पर प्रेम, आकर्षण तथा एक दूसरे की संगति के आनन्द के कारण है। इससे मुझे अच्छाई की झलक मिलती है।

फिर भी मैं कहूंगी कि आपको पुनः परस्पर मिलना है तथा पूर्व प्राप्त आनन्द को पुनः पाना है, अतः प्रसन्न रहने का प्रयत्न कीजिए क्योंकि जुदाई के ये दिन बहुत जल्दी बीत जाएंगे। समय इतना जल्दी बीतता है कि पलक झपकते ही आपका अपने पति/पत्नी से पुनर्मिलन हो जाएगा।

उदास होने की कोई बात नहीं। हंसते–मुस्कराते रहिए। ताकि प्रस्थान करते हुए वे आपके चेहरे पर आंसू न देख पाएं। स्मरण रखें कि आपके चेहरे पर विश्वास तथा उत्साह के भाव होने चाहिए कि हम शीघ्र ही पुनः परस्पर मिलने वाले हैं। उदासी की कोई बात नहीं।

आपको सूर्य की भांति उदार होना चाहिए। आप सूर्य को अपने साथ लेकर चलते हैं। आपको प्रेम तथा स्नेह फैलाना चाहिए ताकि लोग जान सकें कि यह सूर्य आप भारत से लाए हैं। आप लोग योगी हैं कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। आप उस श्रेणी के लोगों के प्रतिनिधि हैं जो अपनी धर्मपरायणता, करुणा तथा प्रेम के लिए प्रसिद्ध हैं। हर चीज का आनन्द लीजिए तथा यह आनन्द जो आपने यहां प्राप्त किया है इसे दूसरे सहजयोगियों तथा सर्वसाधारण लोगों तक भी पहुंचाइए। मैं आप सबके लिए उत्कृष्ट प्रेम की कामना करती हूं। आपकी यात्रा आनन्द दायी हो। परमात्मा आपको धन्य करें।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖